PHILOSOPHY

Hons., Paper VI (Part III)

Dr. S. K. Singh
Mob.- 9431449955).

स्वतंत्रता, समानता और न्याय का पारस्परिक सम्बन्ध
(Relation between Liberty, Equality and Justice)

→ स्वतंत्रता और समानता दोनों का लक्ष्य एक न्यायपूर्ण सामाजिक स्थिति को प्राप्त करना है और इस दृष्टि से स्वतंत्रता और समानता को न्याय का महत्वपूर्ण अंग समझा जाता है। वैसे तो स्वतंत्रता और समानता एक-दूसरे के पूरक हैं, लेकिन किसी विशेष स्थिति में इन दोनों के बीच टकराव उत्पन्न हो सकता है। उदाहरणार्थ 'नागरिक स्वतंत्रता' और 'आर्थिक स्वतंत्रता' के बीच जब टकराव की स्थिति उत्पन्न होगी, तब ऐसी स्थिति में संघर्ष के समाधान का कार्य न्याय की अवधारणा के आधार पर किया जाता है।

इस प्रकार न्याय ही वह अन्तिम सिद्धान्त है जो स्वतंत्रता व समानता तथा इन दोनों के विभिन्न दावों के बीच सामंजस्य उत्पन्न करता है।

→ जो समाज मनुष्य को नागरिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रताएँ प्रदान करता है उसे ही हम न्यायपूर्ण समाज कहते हैं, किन्तु इन स्वतंत्रताओं का उपभोग करने वाले व्यक्ति का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह कोई भी ऐसा कृत्य न करे जिससे अन्य लोगों को स्वतंत्रता से वंचित होना पड़े।

→ न्याय की यह माँग है कि सरकार को व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित नहीं करनी चाहिये इसलिए इसे न्यायसंगत माना जाता है, परन्तु संकटकाल में नागरिक शक्तियों को कुछ समय के लिये सीमित किया जा सकता है। इसका कारण जब राष्ट्र की सुरक्षा पर कोई खतरा उत्पन्न हो जाये तो इसे उचित भी माना जाता है। इसी भाँति कुछ विशेष वर्गों के स्वतंत्रता को भी सीमित करके

Scanned with CamScanner

शोषित वर्गों को अधिकार प्रदान करने का राज्य का प्रयास सर्वथा न्यायसंगत माना जाता है क्योंकि वंचित वर्ग को भी स्वतंत्रता के उपभोग का वैसा ही अधिकार है जितना समाज के अन्य वर्गों का। इस प्रकार अन्यायपूर्ण स्थिति को समाप्त करने के लिये स्वतंत्रता को सीमित किया जा सकता है।

→ वस्तुतः उपरोक्त दृष्टिकोण का समर्थन समतावादी करता है जो तात्विक न्याय में विश्वास करने के कारण न्याय की प्राप्ति हेतु स्वतंत्रता को सीमित करना उचित ठहराते हैं, बशर्ते समाज में उससे समता स्थापित हो। समतावादियों का मानना है कि समता सदैव न्यायसंगत होती है जबकि विषमता को न्यायसंगत ठहराने के लिये तर्कों की जरूरत पड़ती है।

→ दूसरी तरफ ~~के स्वेच्छाचारी~~ स्वेच्छातंत्रवादी विचारक हैं जो आग्रह से प्रेरित हैं एवं इनका मानना है कि न्याय केवल प्रक्रिया तक ही सीमित होनी चाहिये। इनके अनुसार समता समतारूपी न्याय पाने के क्रम में यदि ~~स्वं~~ स्वतंत्रता में कटौती की जायेगी तो तनाव एवं कलह को बढ़ावा देगी। वस्तुतः न्याय केवल प्रक्रिया का विषय है जिसका लक्ष्य स्वतंत्रता को बढ़ावा देना होना चाहिये।

→ इस प्रकार न्याय का सिद्धान्त इस बात की माँग करता है कि स्वतंत्रता और समानता के मध्य टकराव की स्थिति में संपूर्ण समाज के हित को ही सर्वोपरि समझा जाये। इस क्रम में उठनेवाली दुविधापूर्ण समस्याओं का समाधान न्याय के सिद्धान्त के आधार पर किया जाये।

→ अतः न्याय का सिद्धान्त न सिर्फ व्यक्ति व व्यक्ति के बीच ही समन्वय पैदा करता है, बल्कि विभिन्न सिद्धान्तों के बीच सामंजस्य उत्पन्न करने का साधन भी है।

Scanned with CamScanner